समाजशास्त्र

BA Part II Paper II

INDIAN Society and culture

ग्राम समुदाय — गाँव अथवा ग्रामीण समुदाय का अर्थ परिवारों का वह समूह कहा जा सकता है जो एक निश्चित क्षेत्र में स्थापित होता है तथा जिसका एक विशिष्ट नाम होता है गाँव की एक निश्चित सीमा होती है तथा गाँववासी इस सीमा के प्रति सचेत होते हैं। उन्हें यह पूरी तरह से पता होता है कि उनके गाँव की सीमा ही उसे दूसरे गाँवों से पृथक् करती है।

ग्राम समुदाय की परिभाषा — • मैकीवर एवं पेज के अनुसार ग्राम समुदाय उस छोटे या बड़े समूह को कहते हैं जिसके सभी सदस्य किसी क्षेत्र की सीमा में इस प्रकार जीवन बिताते हैं, कि वे किसी विशेष हित की पूर्ति मात्र ही नहीं, बल्कि सामान्य जीवन की सभी बुनियादी शर्तों की पूर्ति में पारस्परिक सहयोग करते हैं।

एमरी एस बोगार्डस के मुताबिक - • ग्राम समुदाय किसी निश्चित क्षेत्र में निवास करनेवाला ऐसा सामाजिक समूह है जिसमें कुछ मात्रा में बंधु भावना वर्तमान होती है।

किम्बाल यंग के अनुसार कि एक समुदाय की पहचान है समान - संस्कृति। समुदाय के सभी सदस्य इसी समान संस्कृति के आदर्शों एवं मूल्यों से निर्देश ग्रहण करते हैं।

• ग्राम समुदाय एक निश्चित स्थान या भूभाग में रहने वाले व्यक्तियों का ऐसा समूह है जिसकी एक संस्कृति होती है एक जैसी जीवन प्रणाली होती है, • जो अपनी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति समुदाय के भीतर ही पूरी कर लेते हैं। इस प्रकार उनमें समुदाय के प्रति वफादारी का भाव होता है।

• समुदाय की विशेषताएँ —

1 निश्चित भौगोलिक क्षेत्र
2 सामुदायिक भावना
3 सामान्य जीवन
4 व्यक्तियों का एक समूह
5 अपनी संस्कृति
6 - विशिष्ट नाम
7 - सापेक्षिक स्थायित्व
8 - स्वतः उत्पत्ति -

ग्रामीण समाज की सबसे मुख्य विशेषता कृषि है ग्रामीण समाज की अर्थव्यवस्था कृषि पर ही टिकी है। हालांकि - गाँव में अन्य व्यवसाय भी होते हैं 70 से 75 प्रतिशत

— 2

लोग प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि पर ही निर्भर होते है। ग्रामीण समुदाय मे संयुक्त परिवारो की प्रधानता पाई जाती है, यहा एकल परिवारो का अभाव होता है।

ग्रामीण समुदाय-

प्रारम्भिक काल से ही मानव जीवन का निवास स्थान ग्रामीण समुदाय रहा है। धीरे धीरे एक ऐसा समय आया जब हमारी ग्रामीण जनसंख्या चरमोत्कर्ष पर पहुँच गयी। आज औद्योगीकरण शहरीकरण का प्रभाव मानव को शहर की तरफ प्रोत्साहित तो कर रहा है लेकिन आज भी शहरीय — दूषित वातावरण से प्रभावित लोग ग्रामीण पवित्रता एवम् शुद्धता को देख ग्रामीण समुदाय मे बसने के लिए प्रोत्साहित हो रहा है। आज ग्रामीण समुदाय के बदलते परिवेश मे ग्रामीण समुदाय मे कुछ परिवर्तन देखने को मिलता है।

ग्रामीण समुदाय विशेषताए — • ग्रामीण समुदाय की कुछ ऐसी विशेषताए होती है जो अन्य समुदाय मे नही पाई जाती है ग्रामीण समुदाय मे पाये जाने वाला प्रतिमान एक विशेष प्रकार का होता है जो आज भी कुछ सीमा तक नगर समुदाय से भिन्न है

(1) कृषि व्यवसाय
(2) प्राकृतिक निकटता
(3) जातिवाद एवं धर्म का अधिक महत्व
(4) सरल और सादा जीवन
(5) संयुक्त परिवार
(6) सामाजिक जीवन मे समीपता
(7) सामुदायिक भावना
(8) स्त्रियो की निम्न स्थिति
(9) धर्म एवम् परम्परागत बातो मे अधिक विश्वास
(10) भाग्यवादिता एवं अशिक्षा का बाहुल्य -

(1) कृषि व्यवसाय — ग्रामीण अंचल मे रहने वाले अधिकांश ग्रामवासियो का खेती योग्य जमीन पर स्वामित्व होता है। खेती करना, उन्हे परिवार के वयोवृद्ध सदस्यो द्वारा प्राप्त होता है। एक ग्रामीण क्षेत्र मे कुछ ऐसे भी परिवार है जिनके पास खेती योग्य जमीन नही होती है वे लोहारी, सोनारी, जैसे छोटे छोटे उद्योग धन्धो मे लगे रहते है तथा महसूस करते है कि काश उनके पास भी खेती योग्य जमीने होती।

2 नाकृतिक निकटता – ग्रामवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि एवम् उससे सम्बन्धित कार्य होता है। सभी जानते हैं कि खेती का सीधा सम्बन्ध प्रकृति से है ग्रामीण जीवन प्रकृति पर आश्रित है।

(3) जातिवाद एवम् धर्म का अधिक महत्व – रूढ़िवादिता एवं परम्परावाद ग्रामीण जीवन के मूल समाजशास्त्रीय लक्षण हैं। फलस्वरूप आज भी हमारे ग्रामीण समुदाय में अधिकाधिक लोगों में जातिवाद, धर्मवाद में अटूट श्रद्धा है। देखा जाता है कि ग्रामीण निवासी अपने-2 धर्म एवं जाति के बड़प्पन में ही अपना सम्मान समझते हैं। ग्रामीण समुदाय में जातिवाद पर ही पंचायतों का निर्माण होता है। ग्रामीण समाज में कुआयुक्त व संकीर्णता पर विशेष बल दिया जाता है।

(4) सरल एवम् सादा जीवन – ग्रामीण समुदाय के अधिकाधिक सदस्यों का जीवन सरल एवम् सामान्य होता है। इनके ऊपर शहरीय चमक दमक का प्रभाव कम होता है। उनका जीवन कृत्रिमता से दूर सादगी में रमा होता है। उनका भोजन, खान-पान एवम् रहन सहन सादा एवम् शुद्ध होता है। गाँव का शिष्टाचार आचार विचार एवम् व्यवहार सरल एवम् वास्तविक होता है तथा अतिथि के प्रति अटूट श्रद्धा एवम् लगाव होता है।

(5) संयुक्त परिवार – ग्रामीण समुदाय में संयुक्त परिवार का अपना विशेष महत्व है। इसलिए ग्रामीण लोग पारिवारिक सम्मान के विषय में सर्वदा सजग रहते हैं। परिवार को टूटने से बचाना तथा पारिवारिक समस्याओं को अन्य परिवारों से गोपनीय रख निपटाने का वे सरल प्रयास करते हैं। पारिवारिक विघटन का सम्बन्ध उनकी सामाजिक परिस्थिति एवं सम्मान से जुड़ा होता है। इसलिए परिवार का मुखिया एवं बड़े बूढ़े सदस्य इसे अपना सम्मान समझकर परिवार की एकता को बनाये रखने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं।

(6) **सामाजिक जीवन मे समीपता** – वास्तव मे ग्रामीण जीवन मे – अत्यधिक समीपता पाई जाती है अधिकाधिक ग्रामीण समुदायो के केवल व्यवसायिक समीपता ही नही अपितु उनके सामाजिक आर्थिक एवम् सास्कृतिक जीवन मे अत्यधिक समीपता पाई जाती है। इस समीपता का मुख्य कारण कृषि एवम् उससे सम्बन्धित व्यवसाय है।

(7) **सामुदायिक भावना** – ग्रामीण समुदाय की एक महत्वपूर्ण विशेषता उनमे व्याप्त सामुदायिक भावना ग्रामीण समुदायो के सदस्यो मे व्यक्तिगत निर्भरता के स्थान पर सामुदायिक निर्भरता अधिक पाई जाती है। इसलिए लोग एक दूसरे पर आश्रित होते है। ग्रामीण समुदाय के एक सीमित क्षेत्र मे बसने के कारण सदस्यो की अपनी समीपता बढ़ जाती है उनमे स्वभाव हम भावना का विकास हो जाता है। जिसे सामुदायिक भावना का नाम दिया जाता है।

(8) **स्त्रियो की निम्न स्थिति** – ग्रामीण समुदाय की अशिक्षा अज्ञानता एव रूढ़िवादिता का सीधा प्रभाव ग्रामीण स्त्रियो की स्थिति पर पड़ता है; भारतीय ग्रामीण समुदाय मे अभी भी अशिक्षा काफी अधिक है। परिणाम स्वरूप ग्रामीण सदस्यो का व्यवहार रूढ़ियो एवम् पुराने सामाजिक मूल्यो से प्रभावित होता है लेकिन आज भी अधिकाधिक ग्रामीण-समुदाय मे बाल विवाह, दहेज प्रथा, पर्दाप्रथा, लड़कियो को शिक्षा एवम् बाहर नौकरी से रोक लगाना, विधवाओ को पुनर्विवाह से वन्चित करना आदि सर्वमौमिक दिखाई देती है। जो स्त्रियो की गिरी दशा के लिए उत्तरदायी है।

(9) **धर्म एवम् परम्परागत बातो मे अधिक विश्वास** – ग्रामीण लोग धर्म पुरानी परम्पराओ एवम् रूढ़ियो मे विश्वास करते है। तथा उनका जीवन सामुदायिक व्यवहार, धार्मिक नियमो एवम् परम्पराओ से प्रभावित होता है। ग्रामीण समुदाय का सीमित क्षेत्र उसे बाहरी दुनिया के प्रभावो से मुक्त रखता है और इसी कारण उसमे विस्तृत दृष्टिकोण भी आसानी से नही पनप पाया है।

(10) भाग्यवादिता एवम् अशिक्षा का बाहुल्य – ग्रामीण समुदाय मे शिक्षा का प्रचार प्रसार अभी भी कम है शिक्षा की अभाव मे ग्रामवासी अनेक अन्ध विश्वासो एवम् कु-संस्कारो का शिकार बने रहते हैं तथा भाग्यवादिता पर अधिक विश्वास करते हैं। इन उपयुर्क्त ग्रामीण विशेषताओ से स्पष्ट है कि परम्परावादिता उनकी सर्व प्रमुख विशेषता है। जैसे-2 सरकार एवम् स्वयसेवी संगठनो के प्रयास से ग्रामीण विकास कार्यक्रमो का कार्यान्वयन विकास बढ़ता जा रहा है। वैसे वैसे उनके जीवन मे परिवर्तन आता जा रहा है।

Name - Dr Arun Kumar

Reader Deptt of Sociology